शक्ति व शान्ति एक दूसरे के पूरक

डॉ.अजय कुमार पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
श्री मु.म.टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय-बलिया (उ.प्र.)

शक्ति एवं शान्ति एक दूसरे के पूरक हैं, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि यह ईश व भक्त की तरह हैं जो एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। शक्ति के बिना शान्ति का और शान्ति के बिना शक्ति को प्राप्त करना संभव नहीं है। सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व शक्ति व शान्ति निरन्तर संघर्षरत थे जो चिरकाल तक संभावी होंगे। वह शक्ति पहले भी थी, अब भी है और आगे भी रहेगी। वह अकाल है। जिसका कोई अंत नहीं है। इस सृष्टि की शुरुआत हुई तो संभव है कि इस सृष्टि का अंत भी होगा। परंतु उस शक्ति की कोई शुरुआत नहीं हुई है और उसका कभी अंत भी नहीं होगा जब हृदय उससे मिलेगा तो आनंद ही आनंद मिलेगा। वह शक्ति कहां है? वह हृदय में ही है। उसकी प्यास भी हृदय में ही है और उस प्यास को मिटाने वाली शक्ति भी हृदय में ही है। परंतु जब गुरु महाराज जी की कृपा से ज्ञान मिलता है तो ज्ञान के द्वारा हृदय को उसका अहसास होता है।

चेहरा और आँखें आसपास में ही हैं ? परंतु चेहरे को देखने के लिए आईने की जरूरत है। आईने को देखने के लिए आँखों की जरूरत है और आँखों को देखने के लिए आईने की जरूरत है आईने में जो परछाई है, उसको देखेंगे तो आपको अपना ही चेहरा दिखाई देगा, किसी दूसरे का नहीं इसी को ष्अपने आपको जाननाश् कहते हैं जो चीज आपमें हैं, उसको जानिए। अपने आपको जानिए अपने आपको अगर जानेगे तो जो आपके अंदर चीज है, उसको भी जानेंगे।

मैंने जहां तक देखा है, शांति सबको चाहिए ऐसा कोई नहीं है, जिसको शांति नहीं चाहिए। सबको शांति चाहिए, पर क्यों नहीं है? क्योंकि अगर अपने अंदर वाले से प्रेम नहीं है, अपने स्वांस से प्रेम नहीं है, स्वयं के जीवन से प्रेम नहीं है तो अशांति अपने आप होगी।

जब मनुष्य नहीं था, परंतु वह शक्ति थी। उसी शक्ति के कारण पृथ्वी बनी। उसी शक्ति के कारण तारे बने। उसी शक्ति के कारण सूरज बना। उसी शक्ति के कारण पानी बना। उसी शक्ति के कारण सारी चीजों की रचना हुई और उसी शक्ति के कारण मनुष्य बना। तो मनुष्य बाद में आया।'तो पहले वह शक्ति थी। ये सारी चीजें बाद में हुईं। बात यह है कि आप उस शक्ति को जानना चाहते हैं या नहीं ? अगर आपका मन कहेगा, तो मन उसको समझ नहीं सकता, क्योंकि वह चीज मन और बुद्धि से परे है। इसलिए मन और बुद्धि उसको समझ नहीं सकती। हृदय एक ऐसी चीज है, जहां से उसको जानने की पुकार आती है। जब मनुष्य अपने जीवन में उस पुकार को स्वीकार करता है, तब वह जिज्ञासु बनता है। तब उसके अंदर सचमुच में जिज्ञासा जगती है। वह मन और बुद्धि की जिज्ञासा नहीं है। वह उस चीज को पाने की, उस चीज को समझने की, उस चीज का अनुभव करने की जिज्ञासा है, जिससे हृदय तृप्त होता है।

विचारणीय विन्दु है कि एक मधुमक्खी हर एक फूल पर जाती है। एक फूल में कितना शहद है? अगर आप एक फूल को तोड़कर उसे मसलेंगे तो उसमें से कितना शहद निकलेगा? दिखाई भी नहीं देगा कि उसमें शहद है। परंतु उस फूल को सूंघकर मधुमक्खी उसके पास जाती है और चाहे उसमें कितना भी पराग हो, उसको इकट्ठा करती है। वहां एक ही नहीं, हजारों-हजारों मधुमक्खियाँ ऐसा ही करती हैं। मधुमक्खी अपनी मेहनत से चाहे थोड़ा-सा भी शहद, थोड़ा-थोड़ा ही रस निकालकर शहद इकट्ठा करती है, परंतु कर लेती है। ठीक इसी प्रकार भक्त द्वारा शान्ति को प्राप्त करने के लिए अद्वितीय शक्तिरूपी भगवान से विविध प्रकार के तकनीकी, प्रौद्योगिकी, आध्यात्मिक इत्यादि विविध मानसिकताओं द्वारा मानव ने संघर्ष, विवाद, युद्ध करते हुए शहीद हो गए, किन्तु शान्ति को प्राप्त नहीं कर सके। शान्ति हेतु समसामयिक परिदृष्य में एन0एफ0टी0 (नॉन-फंजिबल टोकन), मेटा, ब्लाकचेन, क्रिप्टो करेंसी इत्यादि पर की दिशा में अथकनीय रूप से संघर्षरत है, जिसमें प्रमुखतः मेटावर्स एक या फिक्शनल रियलिटी स्पेस है, जिसमें उपयोगकर्ता कंप्यूटर द्वारा बनाए गए कृत्रिम वातावरण में एक स्वाभाविक और सामान्य जीवन का अनुभव करता है।

इस अत्याधुनिक वर्चुअल दुनिया में आप अपनी मर्जी के मुताबिक लगभग सभी काम कर सकते हैं। लेकिन ये सारे काम आप खुद नहीं करेंगे, आपका वर्चुअल श्अवतारश् करेगा। मेटावर्स 3डी तकनीक के जरिए यह सब संभव बनाएगा। इसका वर्चुअल स्पेस एक सामूहिक परियोजना होगी, जिसे दुनियाभर के लोगों गेमिंग उद्योग ने सबसे पहले मेटावर्स का उपयोग करना शुरू किया। इसके सहयोग से गेमिंग कैरेक्टर्स को असल इंसानों के करीब ले आने में बहुत सहयोग मिली है। दक्षिण कोरिया की एक महिला का अपनी मृत्यु हो चुकी बच्ची से मिलना हो या तमिलनाडु का एक जोड़े का आभासी जगत में विवाह करना हो या अन्य किसी भी देश या राज्य में मृत परिजन की जानकारी प्राप्त संभव हुआ है, ऐसा विचारकों का विश्वास है। इसके साथ ही विविध प्रकार के व्यसाय, संपति की खरीद-परोख्त और निवेश जैसे कार्यों में भी इसका प्रयोग हो रहा है। एआरवीआर बॉक्स के जरिए छात्र, स्कूल में अपनी भौतिक उपस्थिति भी दर्ज करा सकते हैं। वे घर बैठे विश्व के किसी भी स्थान में शिक्षा प्राप्त कर सकता हैं। इस मेटावर्स तकनीकी द्वारा शादियां, प्रेम विवाह, एकाएक मन पसंद युवा लड़के-लड़कियों को चयन, तलाक/विवाह विच्छेद किसी भी समय धोखा देने के साथ ही मन पसन्द रेस्तरॉ, लॉन, 5 स्टार होटल इत्यादि स्थानों पर मिलना विविध प्रकार की पार्टियां भी आयोजित करना सुलभ है। यह संवर्धित, आभासी और मिश्रित वास्तविकता के गुलदस्ते की तरह है। यह साथ चलने वाली एक समानांतर दुनिया है। एक स्मार्ट चश्मा पहनकर आप वर्चुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी के अनंत आकाश में गोते लगाएंगे। इसके जरिए आप अपनी ऑफिसियल मीटिंग अटेंड कर सकते हैं, लोगों से मिल-जुल सकते हैं, शॉपिंग कर सकते हैं, यहां तक कि किसी मशहूर सेलिब्रिटी के पड़ोस में घर या जमीन भी खरीद सकते हैं। इसमें रियल टाइम गेमिंग के साथ आप डिस्को और पब जैसी फीलिंग का आनंद भी ले सकते हैं। यद्यपि कि मेटावर्स अभी अपनी शिशु-अवस्था में है। इसका प्रयोग हेल्थकेयर, रक्षा, सुरक्षा, संरक्षा के साथ-साथ रोबोटिक्स, अंतरिक्ष पारिस्थितिकीय इत्यादि क्षेत्र में भी मानव मस्तिष्क की संवेदना से अछुता नहीं है। मेरा हृदय एक फूल है और उसमें आनंद रूपी रस है। वह उस आनंद को पाने की कोशिश करता है। वह समझने लगता है कि 'मैं एक मधुमक्खी की तरह हूं। जबतक मैं जीवित हूं, मैं अपने जीवन को इस आनंद से भर सकता हूँ, इस हृदय रूपी छत्ते को आनंद रूपी शहद से भर सकता हूं। जिस दिन मेरा

ध्यान इधर-उधर होने लगेगा तो मैं उस रस को नहीं ले पाऊंगा। अगर उस रस को नहीं ले पाऊंगा तो इस छत्ते में कभी आनंद रूपी शहद इकट्ठा नहीं हो पाएगा। आपका भी जीवन है। आप भी बहुत कुछ करते हैं और सोचते हैं कि आप जो करते हैं, वह दूसरा नहीं करता है। जो आप हैं, वह दूसरा नहीं है। आपका नाम भी तो अलग है, चेहरा भी अलग है।परंतु आप जैसे भी हैं, एक तरीके से इस संसार के अंदर आपके जैसा कोई नहीं है। वास्तव में स्त्रातजिक व समरतंत्र का मूल मंतव्य शक्ति व शान्ति पर अवलंबित होने के साथ ही वैश्विक परिदृष्य में समस्त नीतियां, योजनाओं-परियोजनाओं का मूलाधार शक्ति व शान्ति ही है। शक्ति व शान्ति अनन्तकालीक है। शक्ति के महत्व को स्पष्ट करते हुए महामौर्य आचार्य कौटिल्य ने स्पष्ट किया था कि - शक्तिशाली राजा के मित्र तो मित्र बने ही रहते हैं उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। युद्ध का अंतिम पर्णित शक्ति ही है। जिससे शान्ति को अलंकृत किया जाता है। अतएव निष्ठापूर्वक अपने अन्तर्मन से ईष्या, द्वेष, धृणा, वाद-विवाद, संघर्ष-युद्ध को समाप्त कर शक्ति व शान्ति का एक अटूट स्तम्भ स्थापित करने हेतु संकल्पित हो।

****

संदर्भ ग्रन्थ-

1.रावत प्रेम जी- हृदय की अभिलाषा
2.डॉ. शर्मा दुर्गेश - सॉफ्टवेयर इंजीनियर, अमर उजाला, फरवरी 2022
3.अर्थशास्त्र - आचार्य कौटिल्य
4.सूचना प्रद्योगिकी- योजना 2021
5.दैनिक जागरण - अप्रैल 2022
6.अमृत्व विचार - संगणक लाल अमृत
7.स्वविचार

हिन्दी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप

कनक राज पाठक
शोधार्थी
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड Mo.9570002575

बीज शब्द - हिन्दी पत्रकारिता, हिन्दी मुद्रण, पत्रकारिता-मनोरंजन, पत्रकारिता का लक्ष्य

प्रस्तावना:-भारत में पत्रकारिता का श्रेय महर्षि नारद मुनि को जाता है। देवत्वकाल में नारद मुनि ने धरती लोक, पाताल और स्वर्ग लोक के बीच संवाद स्थापित किया। नारद मुनि समूचे विश्व का समाचार देवतागणों को सुनाया करते थे। इसके बाद महाभारतकालीन संवाद स्थापित किया संजय ने। महाभारत की लड़ाई का आंखों देखा हाल धृतराष्ट्र को संजय ही सुनाया करते थे। इसके बाद राजाओं और महाराजाओं के काल में शिलालेख, भोज पत्रों पर लेख, मुनादी सहित अन्य जनमाध्यमों से लोगों के बीच सूचनाओं का प्रसार किया जाता था। वैश्विक मानकों के बराबर भारत में हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश उदंत मार्तंड से माना जाता है। यह साप्ताहिक प्रकाशन था और विशुद्ध हिन्दी में इसका प्रकाशन पंडित जुगल किशोर शुक्ल करते थे। भारत में पत्रकारिता के उद्भव काल में अखबारों, पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य था ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ जनमत तैयार करना। अकबर इलाहाबादी ने यहां तक कहा है कि "खींचो न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो"। राष्ट्रीय नवीन मेल के पत्रकार वेद प्रकाश वाजपेयी जी ने कहा था कि "सूरज निकले या न निकले लेकिन अखबार को निकलना होगा"।

उद्देश्य:-"वर्तमान परिदृश्य में हिंदी और पत्रकारिता" विषय का मुख्य उद्देश्य है हिन्दी पत्रकारिता के भूत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी हासिल करना। हिन्दी पत्रकारिता का प्रादुर्भाव किन उद्देश्यों और मिशन के साथ हुआ और यह कैसे विकसित हुआ और भविष्य में इसकी क्या क्या संभावनाएं हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में इन्हीं बातों का उल्लेख किया गया है।

"वर्तमान परिदृश्य में हिंदी और पत्रकारिता"

सन 1826 से लेकर 1884 तक का समय हिंदी पत्रकारिता का उद्भव काल है। साल 1826 में 30 मई को पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत की थी। कलकत्ता से उदन्त मार्तंड नामक समाचार पत्र निकाल कर भारत में हिंदी पत्रकारिता का श्रीगणेश किया। जिसमें उदंत का अर्थ समाचार होता है, जबकि मार्तंड का अर्थ सूर्य है। सूर्य की किरणों की तरह ही इस समाचार पत्र ने अपने विचारों को भारतीय जनमानस तक पहुंचाया है। उदंत मार्तंड हिन्दी और हिन्दवासियों का सच्चा हितैषी था। हिन्दुस्तानियों के हित के लिए यह अखबार सबसे पहले चलाया गया। इसके संपादक जुगल किशोर ने लिखा था "हिन्दी भाषा अपनी निज भाषा में समाचार पढ़कर उसका आनंद लें और इसके महत्व को समझें" यही जुगल जी की हार्दिक कामना और पत्र प्रकाशन का सर्वोच्च लक्ष्य भी था। उल्लेखनीय है कि उतंद मार्तंड भारतवर्ष में हिन्दी का पहला साप्ताहिक समाचार पत्र था। हालांकि यह समाचार पत्र डेढ़ वर्ष तक ही चल पाया। भारत में पत्रकारिता का उदभव काल निष्पक्षता और राष्ट्रवाद से ओतप्रोत था। उदाहरण के तौर पर हम भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने में अखबारों का प्रयोग, जनजागरण और क्रांतिकारी घटनाओं में देख सकते हैं। ब्रितानी हुकूमत के द्वारा भारतीयों की अभिव्यक्ति की आजादी पर तमाम प्रतिबंध लगाने के बावजूद शंखनाद, रणभेरी,